| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 1, Issue 2, December 2018 |

लिंग, विद्यालय एवं समाज

डॉ० राम सरदार

एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक-शिक्षा विभाग, का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या (उ.प्र.)

सार

लिंग और यौन अवधारणाएं एक दूसरे से संबंधित है इसीलिए लिंग और लिंग भेद को यौन और योन भेद के संदर्भ में समझना अधिक सरल है। इसी संदर्भ में लिंग की परिभाषा और अर्थ की विवेचना प्रस्तुत है।

प्राकृतिक विज्ञान में विशेष प्रणाली से प्राणी विज्ञान स्त्री-पुरुष के जैविक लक्षणों का वैज्ञानिक अध्ययन करते हैं। इनका जैविक और पुनर्जनन कार्यों पर ही ध्यान केंद्रित रहता है। विगत वर्षों में ऐसे अध्ययनों को योनि भेद (सेक्स) से संबंधित किया जाने लगा है। सामाजिक विज्ञानों में विशेष रूप से समाजशास्त्र में स्त्री-पुरुषों का अध्ययन लिंग भेद के आधार पर किया जाता है, जिसका तात्पर्य है कि उन्हें सामाजिक अर्थ प्रदान किया जाता है। "स्त्री" और "पुरुष" का अध्ययन सामाजिक संबंधों को गहराई से समझने के लिए किया जाता है। योनि-भेद जैविक-सामाजिक है, और लिंग-भेद सामाजिक संस्कृतिक है। योनि- भेद शीर्षक के अंतर्गत "स्त्री" "पुरुष" का नर-मादा के बीच विभिन्नताओ का अध्ययन करते हैं, जिसमें जैविक गुण जैसे पुनर्जनन कार्य पद्धति, शुक्राणु-अंडाणु एवं गर्भाधान क्षमता, शारीरिक बल क्षमता, शरीर रचना की भिन्नता आदि पर ध्यान दिया जाता है। लिंग भेद में "स्त्री" और "पुरुष" का अध्ययन पति-पत्नी, माता-पिता, भाई-बहन, पुत्र- पुत्री के रूप में अर्थात सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टिकोण से किया जाता है। उनकी समाज में प्रस्थिति और भूमिकाए क्या है? उनके कर्तव्य व अधिकार क्या है? का अध्ययन किया जाता है। लिंग भेद की धारणा का उद्देश्य "स्त्री" और "पुरुष" के बीच सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्नताओं, समानताओं और असमानताओं का वर्णन व्याख्या करना है।

लिंग भेद (सेक्स) शब्द का प्रयोग अन्य ओकेल ने 1972 में अपनी कृति "सेक्स जेंडर एंड सोसाइटी" में किया था। आपके अनुसार "योन भेद" का अर्थ "स्त्री" और "पुरुष" का जैविकीय विभाजन है और लिंगभेद से आपका तात्पर्य स्त्रीत्व और पुरुषत्व के रूप में समानांतर एवं सामाजिक रूप से आसामान विभाजन से है। लिंग भेद की अवधारणा के अंतर्गत "स्त्री" और "पुरुष" के बीच में सामाजिक दृष्टिकोण से जो विभिन्नताएं हैं उनका अध्ययन किया जाता है। लिंग भेद शब्द का प्रयोग सांस्कृतिक आदर्शों स्त्रीत्व और पुरुषत्व से संबंधित धारणाओं के लिए किया जाता है। इस अवधारणा का प्रयोग स्त्री और पुरुष के बीच शारीरिक क्षमताओं के आधार पर जो सामाजिक संस्थाओं और संगठनों में श्रम विभाजन होता है,उनके लिए भी किया जाता है।

परिचय

स्त्रियों ने अपनी सामाजिक भूमिका को लेकर सोचना-विचारना शुरु किया। स्त्री आंदोलन में जहां एक ओर स्त्रियों की भूमिका को सामने लाने का प्रयास किया गया तथा उनकी सामाजिक,राजनैतिक हिस्सेदारी को स्वीकार किया गया तो वही स्त्री विमर्श ने स्त्री को बहस के केंद्र में लाने का प्रयास किया। जिसमें एक ओर समाज में उनकी निम्न स्थिति को बताया गया तो दूसरी तरफ उनसे जुड़े मुद्दे को बहस के माध्यम से केंद्र में रखा गया। केंद्र में स्वतंत्रता,समानता तथा अस्मिता जैसे प्रश्नों को उठाया गया।

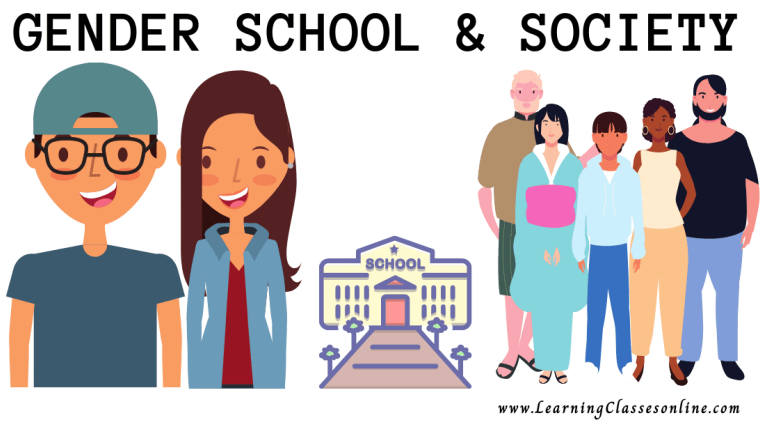

जेंडर का प्रश्न अस्मिता के प्रश्न के भीतर से ही उभरता है,जो स्त्री को स्त्री के नजरिए से देखने का प्रश्न उठाता है,स्त्री तथा पुरुष की सामाजिक संरचना पर सवाल खड़ा कर समाज में बहस की मांग करता है। जेंडर का संबंध एक ओर पहचान से होता है, तो दूसरी ओर सामाजिक विकास की प्रक्रिया से होता है। जहां मानव तथा मानव के बीच अंतर किया गया और एक को पुरुष तथा एक स्त्री

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 1, Issue 2, December 2018 |

की संज्ञा दी गई। जेंडर के बारे में विस्तार पूर्वक जानने से पूर्व कुछ विमर्श किया जाए। सरल शब्दों में कहा जाए तो यह एक जानकारी है जो ज्ञान के रास्ते से गुजर कर हमें सोचने समझने का नजरिया प्रदान करता है। हिंदी में विमर्श शब्द का उत्पत्ति अंग्रेजी भाषा के **"डिस्कोर्स"** नामक शब्द से हुई है तथा डिस्कोर्स शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के डिस्कसरस शब्द से हुई है। इसका अर्थ -बहस, संवाद, वार्तालाप तथा विचारों का आदान-प्रदान। विमर्श को थोड़ा और जानने का प्रयास किया जाए तो **विचारों को सीधे तथा सरल रूप में भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करना विमर्श कहलाता है।** ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में लिखित तथा मौखिक रूप में विचारों की अभिव्यक्ति तथा बातचीत को बृहत प्रमाणित शब्दकोश के तथा वर्ग आदि के अभ्युस्थान के लिए होने वाला वैचारिक मंथन है। **फूकों के मतानुसार** "विमर्श" शब्दों तथा विचारों की प्रणाली है। जो प्रकृतिस्थ रूप से विचार, व्यवहार तथा अभ्यास के द्वारा व्यवस्थित ढंग से निर्मित होता है। जिसे बातचीत के दौरान हम इस्तेमाल करते हैं।

गैलरी तथा कैरोल टाटर "विमर्श एक ऐसी भाषा है जो सामाजिक आधार पर विषय के ऐतिहासिक अर्थ को खोलती है। या सामाजिक पहचान की भाषा है, जो कभी न्यूट्रल नहीं होती है। क्योंकि यह व्यक्ति तथा सामाजिक रूप से जुड़ी होती है।"[1,2]

इस प्रकार विमर्श सामाजिक, ऐतिहासिक तथा आज के संदर्भ में सोचने, बहस करने, तथा मौखिक संचार का तरीका है, जो भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। जेंडर का प्रश्न भी विमर्श की इसी तकनीकी को अपनाता है तथा जेंडर पर खुली बहस की मांग करता है।

सामाजिक संरचना में पुरुषत्व तथा स्त्रीत्व की प्रक्रिया- जेंडर शब्द का संबंध प्रांत में भाषा में लिंग अर्थात स्त्रीलिंग तथा पुलिंग से रहा है। अन्य भाषाओं में जेंडर विभाजन की इस प्रक्रिया के तीन रूप स्त्रीलिंग,पुलिंग का प्रयोग किया जाता है। वही वैदिक संस्कृति में स्त्रीलिंग, पुलिंग तथा नपुंसक लिंग का प्रयोग मिलता है।

विचार – विमर्श

महिलाओं और पुरुषों के लिए उनकी उचित आवश्यकताओं के अनुसार उपचार की निष्पक्षता। इसमें समान उपचार या उपचार शामिल हो सकता है जो कि अधिकारों, लाभों, दायित्वों और अवसरों के संदर्भ में अलग-अलग लेकिन समान माना जाता है। विकास के संदर्भ में अक्सर महिलाओं के ऐतिहासिक और सामाजिक नुकसान की भरपाई के लिए अंतर्निहित उपायों की आवश्यकता होती है।[3,4]

इस अवधारणा को जोड़ती है कि सभी मानव, पुरुष और महिलाएं, दोनों अपनी व्यक्तिगत क्षमताओं को विकसित करने के लिए स्वतंत्र हैं और स्टीरियोटाइप्स, कठोर लिंग भूमिकाओं या पूर्वाग्रहों द्वारा निर्धारित सीमाओं के बिना विकल्प बनाते हैं। लैंगिक समानता का अर्थ है कि महिलाओं और पुरुषों के विभिन्न व्यवहारों, आकांक्षाओं और जरूरतों को एक समान माना जाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि महिलाओं और पुरुषों को समान बनना है, लेकिन यह कि उनके अधिकार, जिम्मेदारियां और अवसर इस बात पर निर्भर नहीं करेंगे कि वे पुरुष या महिला पैदा हुए हैं या नहीं।

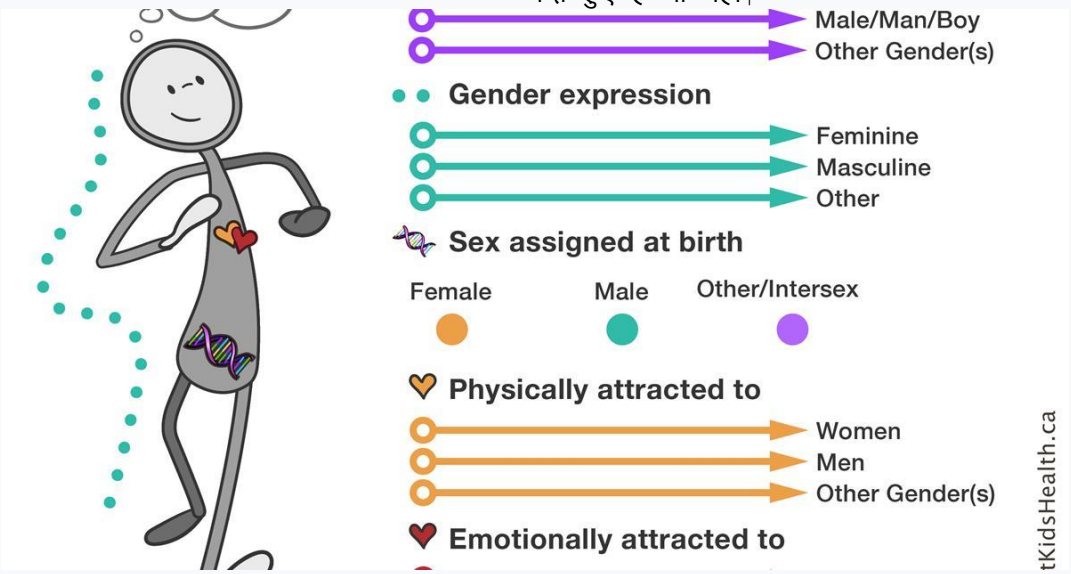

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 1, Issue 2, December 2018 |

नि:संदेह लैंगिक विकास एक सामाजिक सिद्धांत हैं। आज भी लैंगिक विकास का एक समान अथवा सामाजिक सिद्धांत बना पाना अत्यंत कठिन है। इस विषय में अध्ययन तो अनेक किए गए हैं किंतु उनमें सर्वभौमिककरण का अभाव हैं। **सोबल,कार्टर तथा फिफार** ऐसे ही कुछ विद्वान हैं,जिन्होंने लैंगिक सामाजिक विकास जैसे विषयों पर अध्ययन किया हैं। एक सामान्य सामाजिक ढांचे को देखा जाए तो हमारा समाज दो लिंगो स्त्री तथा पुरुष में विभक्त हैं। जैविक रूप में स्त्रियों की स्थिति पुरुषों की अपेक्षा अधिक जटिल तथा पृथक होती हैं। हम यहां निम्नलिखित शब्दों के माध्यम से लैंगिक विकास के अध्ययन का प्रयास करेंगे -

1. जैविक रूप से स्त्रियों का लैंगिक विकास
2. सामाजिक रूप से स्त्रियों का लैंगिक विकास
3. जैविक रूप से पुरुषों का लैंगिक विकास
4. सामाजिक रूप से पुरुषों का लैंगिक विकास[5,6]

१.जैविक रूप से स्त्रियों का लैंगिक विकास- शारीरिक रूप से स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा कम सशक्त तथा कमजोर होती हैं। साथ ही उनकी औसत लंबाई तथा वजन भी पुरुषों की अपेक्षा कम होती हैं। इन सबके अतिरिक्त उन्हें मातृत्व-दायित्व का भी निर्वहन करना होता हैं। जैविक रूप से पुरुषों की अपेक्षा कम सशक्त किंतु अधिक दायित्व का निर्वहन करने वाली होती हैं। यदि इस रूप में देखा जाए तो स्त्रियों में लैंगिक विकास अधिक नहीं हो पाया हैं। आज भी उनकी स्थिति लगभग वैसी ही है जैसी सदियों पूर्व हुआ करती थी, किंतु पिछले कुछ दशकों से भारतीय परिपेक्ष में देखा जाए तो इस स्थिति में कुछ सुधार हुआ है तथा उन्हें सेवा में भी स्थान दिया जा रहा हैं। साथ ही अनेक ऐसे क्षेत्र जहां पहले पुरुषों का अधिकार हुआ करता था अब स्त्रियों के लिए भी खोल दिया गया हैं।

२.सामाजिक रूप से स्त्रियों का लैंगिक विकास- सामाजिक रूप से स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा अधिक सामाजिक सरोकार रखने वाली होती हैं। अपने मातृत्व काल से ही स्त्री का बालक के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित हो जाता हैं जो जीवन पर्यन्त गतिमान रहता हैं। एक स्त्री अपने जन्म से मृत्यु तक विभिन्न सामाजिक नातेदारी संबंधों को सशक्त रूप से मजबूत करती रहती हैं। आधुनिक समय में स्त्रियों की स्थिति में जटिलता भी आई हैं। विशेष रूप से देखा जाए तो इससे कामकाजी महिलाओं को अपने इस स्थिति के निर्वहन के लिए अधिक परिश्रम करना होता है अन्यथा उनके लिए स्थिति अत्यंत जटिल हो जाती हैं।

३.जैविक रूप से पुरुषों का लैंगिक विकास-नि:संदेह जैविक रूप से पुरुष स्त्रियों की अपेक्षा सशक्त होते हैं,जिसके परिणामस्वरूप उनकी परिस्थिति स्त्रियों की अपेक्षा ऊंच्च रही हैं। आरंभ में ही पुरुषों को घर से बाहर गतिविधियां संचालित करनी

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 1, Issue 2, December 2018 |

होती थी तथा उन्हें अभियानों में भी भाग लेना होता था। भारतीय परिपेक्ष में कुछ दशकों पूर्व स्त्री मुख्यता घर में अपने कार्य करती थी, जबकि पुरुष घर के बाहर का कार्य करते थें किंतु वर्तमान में स्थितियां बदल रही है तथा अब लैंगिक रूप से कोई ऐसा कार्य नहीं है जो केवल पुरुषों के लिए आरक्षित हो ।[7,8]

४.सामाजिक रूप से पुरुषों का लैंगिक विकास-जहां एक ओर पुरुष जैविकय रूप से महिलाओं से अधिक सशक्त होते हैं, तो वही सामाजिक तथा सांस्कृतिक रूप से महिलाओं से कम सशक्त में होते हैं। भावनात्मक रूप से महिला पुरुषों की अपेक्षा अपने परिवार तथा समाज के प्रति अधिक संवेदनशील तथा कर्तव्य परायण होती है। यह व्यवस्था आज भी गतिमान हैं। किंतु ऐसा भी नहीं है कि यह एक सार्वभौमिक सिद्धांत है। वर्तमान समय में ऐसा देखने में आता है कि बड़े शहरों में संयुक्त परिवार विघटित हो रहे हैं तथा एकल परिवार अस्तित्व में आ रहे हैं। ऐसी स्थिति में सामाजिक रूप से पुरुषों को वही स्थिति है जो महिलाओं का ,क्योंकि जब पति-पत्नी दोनों आजीविका के लिए घर से बाहर जाते हैं तो दोनों के सामाजिक दायित्व सामान हो जाते हैं। इस प्रकार लैंगिक विकास का सर्वमान्य अथवा धार्मिक सिद्धांत की स्थिति में बनना अत्यंत कठिन है।

लैंगिक विकास पर कुछ विचार

लैंगिक विकास के सामाजिक सिद्धांत के क्षेत्र में कुछ विद्वानों ने अध्ययन भी किया है। यहां पर ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण अध्ययन को उदाहरणार्थ दिया जा रहा है:-

1. कार्टर महोदय अपने अध्ययनों से पाते हैं कि अध्यापक बालिकाओं को औसत क्षेत्र से अधिक अंक प्रदान करते हैं, वही बालक को कम।
2. पोयल महोदय का मानना है कि बालकों की शिक्षा बालिकाओं से 6 के उपरांत आरंभ करनी चाहिए, बालिकाओं का शैशब अवस्था में विकास अधिक तीव्र गति से होता है। इनका मानना है कि बालिकाएं बालकों की अपेक्षा शीघ्र ही बोलना सीख जाती है। साथ ही उनकी गामक क्रियाएं भी अपेक्षाकृत तेज होती है।
3. सोवल बालक बालिकाओं के प्राथमिक स्तर पर अध्यापक प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त बालिकाओं को अधिक अंक प्रदान करती हैं। वहीं पुरुषों में ऐसा पूर्ण रूप से नहीं कहा जा सकता हैं।[9,10]

सामाजीकरण

“सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बालक अपने समाज के स्वीकृत ढंगों को अपने व्यक्तित्व का एक अंग बना लेते हैं।”

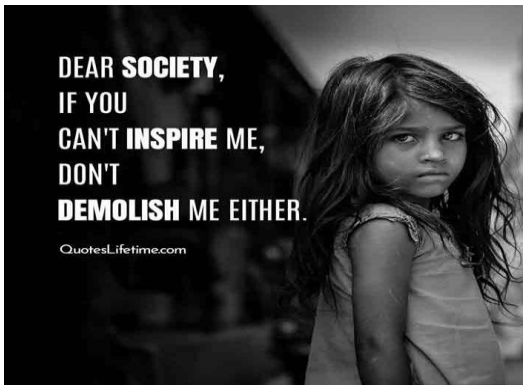

अर्थ एवं परिभाषा- जन्म के समय मानव शिशु मात्र एक प्राणी शास्त्रीय अथवा जैवकीय इकाई के रूप में होता है। इस समय वह रक्त, मांस, और हड्डियों से बना एक जीवित प्राणी होता है। उसमें कोई भी सामाजिक गुण नहीं होता। समाज के रीति-रिवाजों, प्रथाओं मूल्यों एवं संस्कृति सेवा से अंजान होता है। किंतु वह शारीरिक क्षमताओं के साथ जन्म लेता है। इंसानों के भिन्न-भिन्न तरीके जीवन यापन करने के कारण ही वह भी बहुत कुछ सीख लेता है, समाज का क्रियाशील सदस्य बन जाता है तथा संस्कृति को ग्रहण करता है। सीखने की क्षमता व्यक्ति में समाज में रहकर तथा समाज के अन्य लोगों के संपर्क में आने पर विकसित होता है। सामाजिक संपर्क के कारण व्यक्ति एक प्राणी शास्त्रीय प्राणी से सामाजिक प्राणी बन जाता है। समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा मानव, पशु स्तर से उठकर मानव की संज्ञा प्राप्त करता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 1, Issue 2, December 2018 |

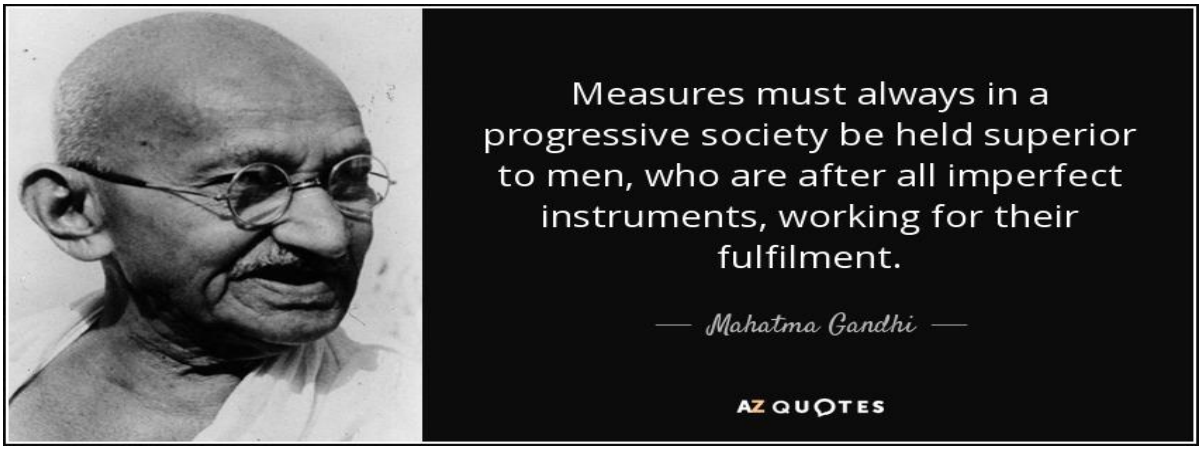

समाजीकरण की परिभाषा

सामाजिकरण की मुख्य परिभाषाएं - वोगार्डस "समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोग मानव कल्याण के लिए एक दूसरे पर निर्भर होकर व्यवहार करा सकते हैं और ऐसा करने में सामाजिक आत्म नियंत्रण सामाजिक उत्तरदायित्व तथा संतुलित व्यक्ति का अनुभव होता है।"[11,12]

ग्रीन "समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक सांस्कृतिक विशेषताओं, आत्मपन और व्यक्तित्व को प्राप्त करता है।"

रॉस "समाजीकरण सहयोग करने वाले व्यक्तियों में हम भावना का विकास करता है और उनमें एक साथ कार्य करने की इच्छा तथा क्षमता में वृद्धि करता है"

रुसेक "बालक का सामाजिकरण बालकों के समूह में सर्वोत्तम रूप से होता है और बालक दूसरे बालक का सर्वोत्तम शिक्षक है।"

स्टीवर्ट एवं ग्लिन "समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोग अपनी संस्कृति के विश्वासों को ग्रहण करते हैं।"

ड्रेवर "समाजीकरण व प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक आदर्शों को स्वीकार करके अपने सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन करता है और इस प्रकार वह उस समाज का मान सहयोगी और कुशल सदस्य बनता है।"

न्यूमेयर "एक व्यक्ति के सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होने की प्रक्रिया का नाम ही समाजीकरण है।"

फीचर "समाजीकरण प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक व्यवहारों को स्वीकार करता है और उनसे अनुकूलन करना सीखता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि समाजीकरण सीखने की एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिशु अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। समाज का क्रियाशील सदस्य बनता है तथा सामाजिक आदर्शों मूल्यों एवं प्रतिमानों को सीखकर उनके अनुरूप आचरण करता है।[13,14]

समाजीकरण की प्रक्रिया- समाजीकरण की प्रक्रिया के महत्वपूर्ण कारक निम्नलिखित हैं:- १. पालन-पोषण:- उचित समाजीकरण के लिए आवश्यक है कि बालक का पालन पोषण किया जाए ऐसा करने पर ही समाज के आदर्श मूल्यों के अनुरूप आचरण करना सीखता है।

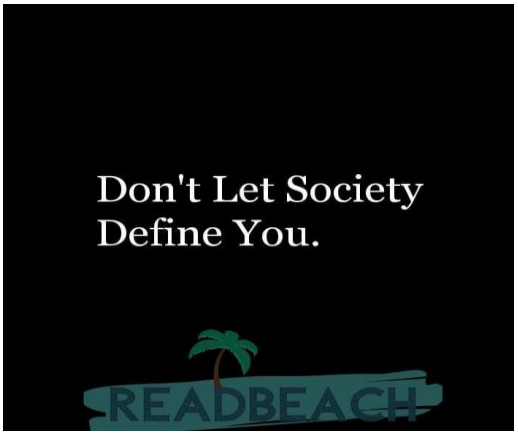

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 1, Issue 2, December 2018 |

२.सहकारिता:- जैसे-जैसे बालक अपने साथियों का सहयोग पाता है वैसे वैसे वह दूसरों का सहयोग भी प्रारंभ कर देता है इससे उसकी सामाजिक प्रवृतियां संगठित हो जाती है।

३.सहानुभूति:- बालक, प्रारंभ में अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर रहता है। यहां पर ध्यान रखना आवश्यक है कि परिवार में बालक की समस्त आवश्यकताएं पूरी करना पर्याप्त नहीं। बल्कि उसके साथ सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना भी अनिवार्य है। बालक अपनत्व की भावना अनुभव करने लगता है उन्हें अधिक प्यार भी करने लगता है।

४.आत्मीकरण:-जब परिवार तथा अन्य समूह द्वारा बालक को सहानुभूति प्राप्त होती है समीकरण की भावना का विकास होता है।

५.पुरस्कार एवं दंड:- जब बालक समाज के आदर्शों एवं प्रतिमानों के अनुरूप आचरण करता है तो उसकी प्रशंसा होती है अथवा उसे उचित रूप में पुरस्कृत किया जाता है। इसके विपरीत जब वह समाज के आदर्शों के विपरीत आचरण करता है तो उसे दंड दिया जाता है। इससे बालक के सामाजिककृत होने में सहायता मिलती है।

६. अनुकरण:- अनुकरण समाजीकरण का एक मूलभूत तत्व है। बालक परिवार पड़ोस तथा अन्य समूहों के लोगों को जिस प्रकार का व्यवहार करते हुए देखता है, उसी का अनुसरण करने लगता है।

७.सामाजिक शिक्षण :-सामाजिक शिक्षण का भी बालक के समाजीकरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह सामाजिक शिक्षण परिवार से प्रारंभ होता है। परिवार में बालक माता-पिता,भाई-बहन तथा अन्य सदस्यों से रहन-सहन उठना बैठना,खान-पान बोलचाल आदि के विषय में शिक्षा प्राप्त करता है।[15]

परिणाम

समाजीकरण प्रक्रिया दिर्घ एवं जटिल है।इस कार्य में अनेक संस्थाओं और समुद्रों का योगदान होता है। सामाजिकता का विकास करने या उसके सामाजिकरण में सहायता देने वाले प्रमुख साधन अथवा तत्व निम्नलिखित हैं-

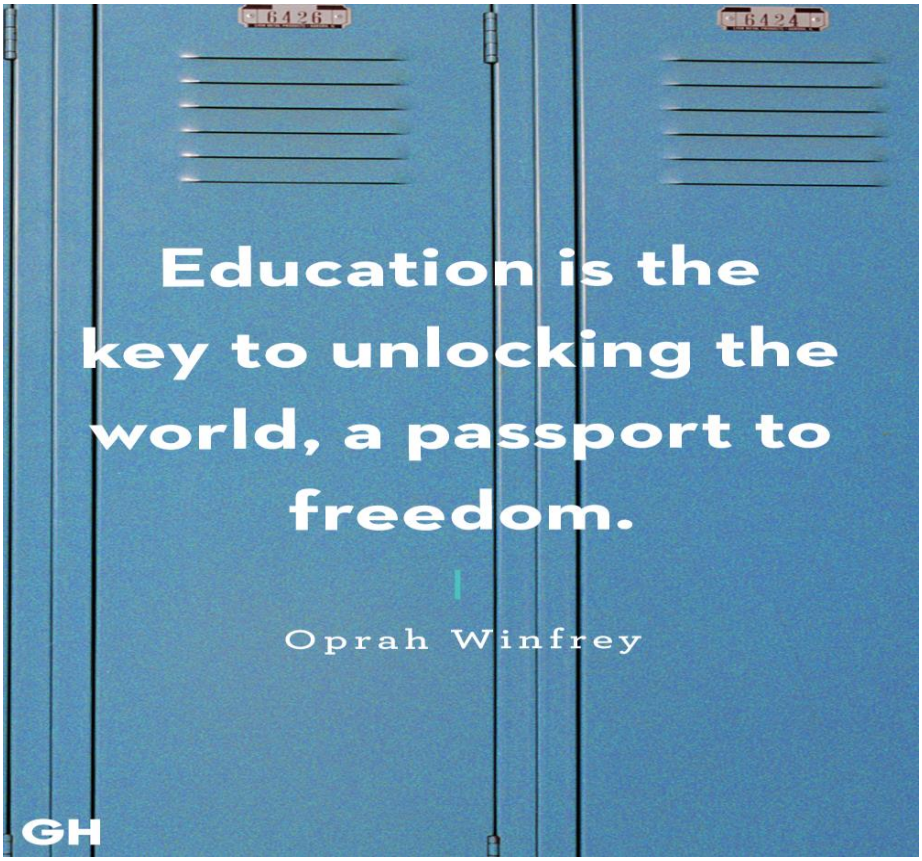

परिवार- समाजीकरण करने वाली संस्था से परिवार सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि बालक परिवार में ही जन्म लेता है। उन्हीं के संपर्क में आता है। कुछ विद्वान परिवार को समाजीकरण का सबसे स्थाई साधन मानते हैं।मां-बाप की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि उनकी संबंध परस्पर सौहार्द पूर्ण है तो बालक का सामाजिकरण उचित ढंग से हो जाता है, यदि उनमें कला होती है तो सामाजिकरण विकृत हो जाता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 1, Issue 2, December 2018 |

पड़ोस- परिवार के समान पड़ोसी से भी बालक के समाजीकरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है इसी कारण अच्छे लोग किराए के लिए मकान लेते समय इस बात पर काफी ध्यान रखते हैं कि पड़ोसी कैसा है?पड़ोस के बालकों अथवा बड़ों की संगति में बालक बिगड़ भी सकता है और सुधर भी सकता है। वस्तुत पड़ोस एक प्रकार का बड़ा परिवार है। वैसे शहरों की तुलना में गांव में पड़ोस का अधिक प्रभाव होता है। पड़ोस के लोग बालक को प्यार में कई नई बातों का ज्ञान करा देते हैं तथा उसकी प्रशंसा तथा निंदा द्वारा उपदेश समाज सम्मत व्यवहार करने को प्रेरित करते हैं।

विद्यालय -परिवार व पड़ोस के बाद बालक के समाजीकरण में विद्यालय का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। विद्यालय में ही उसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदर्शों एवं मान्यताओं की शिक्षा प्राप्त होती है। विद्यालयों में बालक पारिवारिक पृष्ठभूमि से आए अन्य बालकों के संपर्क में आता है। जिससे समाजीकरण तीव्र गति से होने लगता है। विद्यालय में बालक को कुछ विशिष्ट नियमों का पालन करना पड़ता है। इससे उसमें धीरे-धीरे आत्म नियंत्रण भी विकसित होने लगता है। विद्यालय में प्राय बालक का कोई ना कोई अध्यापक अवश्य मॉडल होता है जिसके अनुरूप वह अपने आपको ढालना सीखाता है।

समुदाय या समाज- समुदाय या समाज की बालक के समाजीकरण को विभिन्न रूपों में प्रभावित करता है। समान जिन साधनों के माध्यम से बालक के समाजीकरण को प्रभावित करता है उनमें प्रमुख हैं-

संस्कृति- इतिहास जातीय एवं राष्ट्रीय प्रथा।

कला- सहित सामाजिक प्रथाएं और परंपराएं।

जातीय पूर्व धारणाएं- समाज का आर्थिक और राजनीतिक संगठन

मनोरंजन के साधन और वर्ग और सुविधाएं।

जाति- समाजीकरण का एक प्रमुख कारण जाति भी है। प्रत्येक जाति के अपने रीति-रिवाज,आदर्श,परंपराएं और संस्कृतिक उपलब्धियां होती है तथा अपनी जाति की विशेषताओं को स्वाभाविक रूप में ग्रहण कर लेता है। यही कारण है कि प्रत्येक जाति के बालक का समाजीकरण भिन्न होता है।उदाहरण- बालक के समाजीकरण का रूप बालक के समाजीकरण से भिन्न होगा।

धर्म- बालक के समाजीकरण में धर्म का गहरा प्रभाव होता है। ईश्वरीय भय एवं श्रद्धा के कारण वह नैतिकता तथा अन्य गुणों को ग्रहण करता है।

उसमें पवित्रता,न्याय,शांति,सच्चरित्रता,कर्तव्यपरायणता,दया,इमानदारी आदि गुणों का विकास करने में धर्म प्रमुख भूमिका निभाता है। धर्म ग्रंथ, उपदेशक एवं साधु संतों का प्रभाव भी उसके आचरण पर पड़ता है। धर्म ग्रंथ, उपदेशक एवं साधु संतों का प्रभाव भी उसके आचरण पर पड़ता है।[12,13]

निष्कर्ष

कुछ सामय पूर्व ही भारत सरकार द्वारा एक उद्घोष दिया गया था,"सब पढ़ें,सब बढ़ें" और यह उद्घोष सभी प्राथामिल व पूर्व माध्यमिक विद्यालयों पर तथा अन्य जगह विज्ञापनों के रूप में प्रकाशित हुआ था,जिसके अनुसार एक पेन्सिल के एक सिरे पर एक बालिका का चित्र बना हुआ था व दुसरे सिरे पर एक बालक का चित्र बना हुआ था, पुनः एक और उद्घोष भारत सरकार द्वारा स्तीत्व में लाया गया जिसका प्रचार-प्रसार अब भी अधिक जोरों पर है,जो इस प्रकार है कि,"बेटी पढ़ाओ,बेटी बचाओ" और सायद

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 1, Issue 2, December 2018 |

इस उद्घोष का मान भारत की राजधानी दिल्ली में घटित "निर्भया-कांड" के उपरान्त हजारों गुना बढ़ गया, इस प्रकार भारत गणराज्य की केंद्र सरकार व अन्य प्रान्तों तथा केंद्र शासित निकायों की सरकारें व प्रशासन लैगिक पक्षपात न करते हुए शिक्षा की समानता पर कितना जिम्मेदार व गंभीर है ये उद्घोष स्वतः सिद्ध करते हैं ॥[14,15]

चूँकि हमारा राष्ट्र ढांचागत रूप से गांवों से निर्मित है, अनेकता में एकता इसकी विशिष्ट पहचान है, अब अनेकता तो विभिन्न प्रकार की है जैसे कि,रूप,रंग,वेष-भूषा,भाषा,क्षेत्र,पंथ,सम्प्रदाय आदि-आदि | और विभिन्न अनेक्तावों की अपनी अलग-अलग विशेषताएं हैं | विभिन्न प्रान्तों के लोगों के रहन-सहन सोच समझ एक-दुसरे कुछ न कुछ जुदा है ॥[16]

संदर्भ

1) एफलैंड, आर। 1998। सभ्यताओं का सांस्कृतिक विकास मेसा कम्युनिटी कॉलेज।
2) जेनकिंस, रिचर्ड (2002)। समाजशास्त्र की नींव । लंदन: पालग्रेव मैकमिलन.
3) लेन्स्क□, गेरहार्□ □. (1974). ह्यूम□ सोसाइटी□: ए□ इंट्रोडक्श□ ट□ मैक्रोसोशियोलॉज□ □ न्यूयॉर्□: मैकग्र□-हि□, इं□. .
4) रेमंड विलियम्स, कीवर्ड्स: ए वोकैबुलरी ऑफ कल्चर एंड सोसाइटी । फोंटाना, 1976।
5) अल्थुसर , लुई और बलिबार, एटियेन । पठन पूंजी । लंदन: वर्सो, 2009।
6) बॉटमोर, टॉम (एड)। ए डिक्शनरी ऑफ मार्क्सिस्ट थॉट , दूसरा संस्करण। माल्डेन, एमए: ब्लैकवेल पब्लिशिंग, 1991. 45-48।
7) कैलहौं, क्रेग (ईडी), डिक्शनरी ऑफ द सोशल साइंसेज ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (2002)
8) हॉल, स्टुअर्ट । "आधार और अधिरचना रूपक पर पुनर्विचार"। वर्ग, आधिपत्य और पार्टी पर कागजात । ब्लूमफ़ील्ड, जे., एड. लंदन: लॉरेंस एंड विशार्ट, 1977।
9) क्रिस हरमन । " आधार और अधिरचना "। अंतर्राष्ट्रीय समाजवाद 2:32, ग्रीष्म 1986, पीपी 3-44।
10) हार्वे, डेविड । मार्क्स की राजधानी का सहयोगी । लंदन: वर्सो, 2010.
11) लैरेन, जॉर्ज। मार्क्सवाद और विचारधारा । अटलांटिक हाइलैंड्स, एनजे: ह्यूमैनिटीज प्रेस, 1983।
12) लुकाक्स, जॉर्ज । इतिहास और वर्ग चेतना । कैम्ब्रिज, एमए: एमआईटी प्रेस, 1972।
13) पोस्टोन, मोइशे । टाइम, लेबर एंड सोशल डोमिनेशन: ए रीइंटरप्रिटेशन ऑफ मार्क्स क्रिटिकल थ्योरी । कैम्ब्रिज [इंग्लैंड]: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993।
14) विलियम्स, रेमंड । मार्क्सवाद और साहित्य । ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1977।
15) लियोनिद ग्रिफेन । एक सुपरऑर्गेनिज्म के रूप में समाज । वैज्ञानिक विरासत। नंबर 67 वॉल्यूम 5. पी। 2011
16) ब्रिग्स, आसा (2000)। सुधार का युग (दूसरा संस्करण)। लॉन्गमैन। .